शोध

18

ikFkfed fo|ky;k d l jdkjh rFkk xj & l jdkjh f'k{kdk dh dk; l rf"V dk vè; ;u

vkQrkc tkdjkfl íhdh*

किसी भी कार्य की गुणवत्तापूर्ण परिणति के लिए कार्यसंतुष्टि एक प्रेरणा का कार्य करती है जिसकी वजह से व्यक्ति अपना कार्य करने में आनंद की अनुभूति करता है। अध्यापन कार्य में कार्य संतुष्टि का होना ज़रूरी है क्योंकि इससे विद्यालयी वातावरण सीधे-सीधे प्रभावित होता है। प्रस्तुत अध्ययन उन तथ्यों का विश्लेषण करता है जिनकी वजह से अध्यापकों की कार्य करने की दृष्टि प्रभावित होती है।

भारतीय परंपरा में अध्यापकों को समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। वह सामाजिक शक्तियों परंपराओं और आदर्शों का मान रखता है क्योंकि वह समाज के अनेक व्यक्तियों के संपर्क में आता है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उस राष्ट्र की शिक्षा पद्धति पाठ्यक्रम तथा विशेष रूप से शिक्षकों पर निर्भर करती है।

रवींद्रनाथ ठाकुर के शब्दों में "एक अध्यापक तब तक नहीं सिखा सकता जब तक कि स्वयं वह सीख न रहा हो, ठीक उसी तरह जैसे एक दीपक दूसरे दीपक को प्रज्जवलित नहीं कर सकता जब तक उसकी स्वयं की ज्योति जलती न रहे।" 21वीं शताब्दी में भौतिकता के अत्यधिक विस्तार होने तथा ज्ञान के क्षेत्र की व्यापकता के कारण शिक्षा के क्षेत्र में अमूल्य परिवर्तन दिन-प्रतिदिन तीव्र गति से हो रहे हैं। जिससे अध्यापकों की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ, उनका स्वयं का व्यक्तित्व तथा अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि प्रभावित हो रही है। कार्यसंतुष्टि अध्यापकों के लिए एक प्रकार की प्रेरणा है जिससे वह अपना कार्य संपादित करने में आनंद की अनुभूति प्राप्त करते हैं।

समस्या का कथन- सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

उद्देश्य-

1. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि का अध्ययन करना।
2. गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि का अध्ययन करना।

* *प्रवक्ता*, बी.एड.विभाग, सीतापुर शिक्षा संस्थान, सीतापुर-261001

3. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों तथा गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में वृद्धि हेतु प्रभावी उपायों का सुझाव देना।

परिकल्पना-

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों तथा गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जनसंख्या एवं प्रतिदर्श- सीतापुर जनपद के प्राथमिक विद्यालयों के सरकारी तथा गैर-सरकारी 100 अध्यापकों का चयन किया गया।

प्रदत्त संग्रह- प्रस्तुत अध्ययन में अध्यापकों की कार्य संतुष्टि से संबंधित प्रदत्त एकत्र करने के लिए डा. प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा द्वारा निर्मित कार्यसंतुष्टि मापक (टीचर-जॉब सैटिस्फैक्शन तथा अध्यापकों के सुझावों को एकत्र करने के लिए स्वनिर्मित प्रपत्र का प्रयोग किया गया)।

सांख्यिकीय विधि- प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, मात्रक त्रुटि आदि ज्ञात किया गया। तत्पश्चात् प्राप्त माध्यमानों में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने हेतु क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया।

तालिका संख्या-1
अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि का अध्ययन

क्र सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि
1.	सरकारी अध्यापक	50	17.3	6.105	992
2.	गैर-सरकारी अध्यापक	50	13.66	2.268	

तालिका संख्या-2
प्राथमिक विद्यालयों के सरकारी अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि का प्रतिशत

क्र.सं.	कार्यसंतुष्टि की श्रेणी	कार्यसंतुष्टि का प्रतिशत
1.	उच्च श्रेणी की संतुष्टि	26.78 प्रतिशत
2.	उत्तम श्रेणी की संतुष्टि	21.7 प्रतिशत
3.	औसत श्रेणी की संतुष्टि	17.82 प्रतिशत
4.	निम्न श्रेणी की संतुष्टि	13.5 प्रतिशत
5.	अति निम्न श्रेणी की संतुष्टि	12.02 प्रतिशत

तालिका (2) से स्पष्ट है कि प्राथमिक विद्यालय के सरकारी अध्यापकों की कार्य संतुष्टि उच्च स्तर की 26.78 प्रतिशत की है जबकि अति निम्न श्रेणी की संतुष्टि का स्तर 12.02 प्रतिशत है।

तालिका संख्या-3
प्राथमिक विद्यालयों के गैर-सरकारी अध्यापकों का प्रतिशत

क्र.सं.	कार्य-संतुष्टि की श्रेणी	कार्यसंतुष्टि का प्रतिशत
1.	उच्च श्रेणी की संतुष्टि	16.24 प्रतिशत
2.	उत्तम श्रेणी की संतुष्टि	15.26 प्रतिशत
3.	औसत श्रेणी की संतुष्टि	14.3 प्रतिशत
4.	निम्न श्रेणी की संतुष्टि	12.9 प्रतिशत
5.	अति निम्न श्रेणी की संतुष्टि	10.9 प्रतिशत

तालिका (3) से स्पष्ट है कि प्राथमिक विद्यालयों के गैर-सरकारी अध्यापकों की कार्य संतुष्टि उच्च स्तर की 16.24 प्रतिशत की है जबकि अति निम्न श्रेणी की संतुष्टि का स्तर 10.9. प्रतिशत है।

क्रांतिक अनुपात
तालिका संख्या-4

क्रम सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता का स्तर
1	सरकारी अध्यापक	50	17.3	6.105	4.26	.01
2	गैर-सरकारी अध्यापक	50	13.38	2.268		

उक्त तालिका में सरकारी अध्यापकों तथा गैर-सरकारी अध्यापकों के मध्यमान क्रमशः 17.3 और 13.38 है। मानक विचल 6.105 तथा 2.268 प्रदर्शित है। अंतर की सार्थकता की जाँच करने के लिए क्रांतिक अनुपात ज्ञात किया जो कि 4.26 आया मध्यमान की 01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। अतः सरकारी अध्यापकों और गैर-सरकारी अध्यापकों में सार्थक अंतर है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत है।

अध्यापकों से प्राप्त सुझाव

1. अध्यापकों के वेतन में बढ़ोत्तरी की जाए।
2. शैक्षिक अनुभवों के अनुसार अध्यापकों की पदोन्नति के अवसर दिए जाँए।
3. शिक्षकों को नवीन शिक्षण विधियों से परिचित कराने के लिए समय-समय पर पुनः प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए।
4 शिक्षकों को अध्यापन कार्य में स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।
5. विद्यालयों में हिंदी तथा अँग्रेज़ी शिक्षण की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।
6. शिक्षा में कंप्यूटर तथा आधुनिक तकनीक का भी प्रयोग होना चाहिए।
7. पाठ्यक्रम में भी समयानुसार परिवर्तन की आवश्यकता है।

प्रस्तुत शोध में दिए गए सुझावों पर अमल किया जाए तो अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि और स्तर को अधिक उन्नत किया जा सकता है।

शोध कार्य का शैक्षिक महत्त्व

प्रस्तुत शोध सरकारी तथा गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि पर आधारित है। सरकारी विद्यालयों के आँकड़े इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि तुलनात्मक संतुष्टि गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की अपेक्षा बेहतर है। इसका मुख्य कारण यह है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों का वेतनमान निजी प्राथमिक विद्यालयों की तुलना में बेहतर है, साथ ही सेवाकाल की पूर्ण निश्चितता उनकी कार्यसंतुष्टि के स्तर को बेहतर बनाती है जबकि गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के वेतन में विसंगतियाँ तथा सेवाकाल की अनिश्चतता उनकी कार्य संतुष्टि को प्रभावित करती हैं। गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों को सभी प्रकार की सुविधाएँ दी जाएँ तो इनके भी कार्य संतुष्टि का स्तर बेहतर होगा। साथ ही वह लगन और निष्ठा के साथ शिक्षण कार्य करेंगे।

❑❑❑